DR. P. DATCHANAMOORTHY

Dr. P. Datchanamoorthy is an eminent artist of Thavil music. Thavil is a precusion musical instrument, which is played commonly in folk music and classical music with Nathaswaram. It is played in traditional spiritual feasts and ceremony mostly in the southern states of India.

2. Born on 21st December, 1956 in a small village in the Union Territory of Puducherry, Dr. Datchanamoorthy is the son of Shri R. Poovan, a known Nathaswara vidhvan. As Nathaswaram goes with Thavil Music, he learned and practiced Thavil music from the age of 15. His beatings are echoed in many spiritual and government celebration and ceremonies. He has played Thavil in more than 5000 temples, 8000 domestic and traditional ceremonies and over 3000 govt organised sociocultural programs from 2006 onwards. The track record of him shows that he has been receiving one honour or award almost every year. He has dedicated his life time for taking the Thavil music to future generation.

3. Based on his skilled and commendable performaces, Government of Puducherry honoured Dr. Datchanamoorthy by giving the title 'Puducherry Kalaimamani' in 2009. By the virtue of his Thavil music, he continued his performance in many stages and forum and bagged many title like Thavil Esai Vendhar, Thavil Esai Enthal, Thavil Esai Thilagam, Thavil Esai Mamani, Thavil Esai Sudar Oli, Thavil Esai Bushan and Thavil Esai Kalai Vendhar.

4. Dr. Datchanamoorthy is also the recipient of fellowship from music academy Sabas and Sangams. Bharathiya Dalit Sahitya Academy awarded him Dr. Ambedkar Fellowship National Award in 2011 and Bagavan ji Buddha Fellowship New Delhi in 2017. In 2014, he received Kanchi Kaamakodi Peedam Asthana Vidvan award from Sankara Madam, Kanchipuram in Tamilnadu. He is the recipient of title 'Doctor of Music Thavil Award' from International Peace University, Germany in 2022 at Puducherry.

डॉ. पी. दत्वानमूर्ति

डॉ . पी. दत्वानमूर्ति थाविल संगीत के एक प्रख्यात कलाकार हैं। थाविल एक ताल वाद्ययंत्र है, जिसे आमतौर पर लोक संगीत और शास्त्रीय संगीत में नाथस्वरम के साथ बजाया जाता है। इसे ज़्यादातर भारत के दक्षिणी राज्यों में पारंपरिक आध्यात्मिक उत्सवों और समारोहों में बजाया जाता है।

2. 21 दिसंबर, 1956 को संघ राज्य क्षेत्र पुदुचेरी के एक छोटे से गांव में जन्मे, डॉ. दत्वानमूर्ति जाने–माने नाथस्वर विद्वान श्री आर. पूवन के पुत्र हैं। नाथस्वरम के साथ थाविल संगीत के संयोजन को देखते हुए, उन्होंने 15 वर्ष की आयु से ही थाविल संगीत सीखा और उसका अभ्यास किया। उनकी थापें कई आध्यात्मिक और सरकारी समारोहों और उत्सवों में गूंजती हैं। उन्होंने वर्ष 2006 से अब तक 5000 से अधिक मंदिरों, 8000 से अधिक घरेलू और पारंपरिक समारोहों और 3000 से अधिक सरकार द्वारा आयोजित सामाजिक–सांस्कृतिक कार्यक्रमों में थाविल बजाया है। उनके ट्रैक रिकॉर्ड से पता चलता है कि उन्हें लगभग हर साल कोई न कोई सम्मान या पुरस्कार मिलता रहा है। उन्होंने अपना पूरा जीवन थाविल संगीत को भावी पीढ़ी तक पहुँचाने के लिए समर्पित कर दिया है ।

3. उनके कुशल और सराहनीय प्रदर्शन के आधार पर पुदुचेरी सरकार ने डॉ. दत्वानमूर्ति को वर्ष 2009 में 'पुडुचेरी कलैइमामाणि' की उपाधि देकर सम्मानित किया। अपने थाविल संगीत के बल पर उन्होंने कई मंचों और सम्मेलनों में अपना प्रदर्शन जारी रखा और थाविल ईसाई वेन्धर, थाविल ईसाई एनथल, थाविल ईसाई थिलागाम, थाविल ईसाई मामाणि, थाविल ईसाई सुदर ओली, थाविल ईसाई भूषण और थाविल ईसाई कलाई वेन्धर जैसे कई खिताब जीते।

4. डॉ. दत्वानमूर्ति को संगीत अकादमी सबास और संगम से भी फेलोशिप मिली है। भारतीय दलित साहित्य अकादमी ने उन्हें वर्ष 2011 में डॉ. अंबेडकर फेलोशिप राष्ट्रीय पुरस्कार और वर्ष 2017 में भगवान जी बुद्ध फेलोशिप नई दिल्ली से सम्मानित किया गया। वर्ष 2014 में उन्हें तमिलनाडु के कांचीपुरम स्थित शंकर मैडम से कांची कामकोडी पीदम अस्थाना विद्वान पुरस्कार मिला। वर्ष 2022 में उन्हें पुदुचेरी में अंतर्राष्ट्रीय शांति विश्वविद्यालय, जर्मनी से 'डॉक्टर ऑफ म्यूजिक थाविल अवार्ड' की उपाधि प्राप्त हुई है ।